ISSN 0975-217X Vol. No. 30, Issue No. 2, April-June, 2026

डिजिटल युग में मूल्य–आधारित पत्रकारिता के प्रणेता : राजयोगी करुणाकर शेट्टी

डॉ. अनीता जनजानी*

सारांश

मीडिया के स्वरूप और प्रौद्योगिकियों के विकास के साथ पत्रकारिता के दायरे और प्रभाव में उल्लेखनीय विस्तार हुआ है। तथापि, इसकी मूल आत्मा सदैव सत्य, वस्तुनिष्ठता, नैतिक उत्तरदायित्व तथा जनहित जैसे शाश्वत मूल्यों पर आधारित रही है। इस ऐतिहासिक क्रम में 'मूल्य–आधारित पत्रकारिता' एक विशिष्ट एवं अर्थपूर्ण परंपरा के रूप में उभरकर सामने आती है, जो केवल सूचना–प्रसारण तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक चेतना, नैतिक संवेदनशीलता एवं सकारात्मक परिवर्तन को भी सशक्त रूप से प्रोत्साहित करती है। आधुनिक डिजिटल युग में मूल्यनिष्ठ संचार एवं पत्रकारिता को सुदृढ़ करने में उल्लेखनीय योगदान देने वाले प्रभावशाली व्यक्तित्वों में राजयोगी दादा करुणाकर शेट्टी का नाम विशेष आदर के साथ लिया जाता है।

आधुनिक डिजिटल युग में मूल्यनिष्ठ संचार एवं पत्रकारिता को सुदृढ़ करने में उल्लेखनीय योगदान देने वाले प्रभावशाली व्यक्तित्वों में राजयोगी दादा करुणाकर शेट्टी का नाम विशेष आदर के साथ लिया जाता है। प्रस्तुत लेख उनके जीवन और कृतित्व का मात्र विश्लेषण नहीं है, बल्कि समकालीन भारतीय मीडिया परिदृश्य के व्यापक संदर्भ में उनके योगदान को स्थापित करने का प्रयास भी है। यह अध्ययन एक ऐतिहासिक एवं शैक्षिक दृष्टि से समृद्ध परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करता है, जो वर्तमान पत्रकारों को मूल्य–निष्ठ, उत्तरदायी एवं मानव–केंद्रित पत्रकारिता के प्रायः विस्मृत सिद्धांतों से पुनः जुड़ने के लिए प्रेरित करता है। इन मूलभूत आदर्शों की पुनर्व्याख्या के माध्यम से यह शोध, तीव्र गति से बाज़ार–प्रेरित एवं डिजिटल रूप से विस्तारित मीडिया परिवेश में नैतिक–पत्रकारिता की स्थायी प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

कुंजी शब्द: मूल्य–आधारित पत्रकारिता; डिजिटल मीडिया; नैतिक संचार; भारतीय मीडिया; राजयोगी दादा करुणाकर शेट्टी; मीडिया नैतिकता; मानव–केंद्रित पत्रकारिता; सामाजिक उत्तरदायित्व

* शिक्षाविद् एवं मीडिया प्रोफेशनल; वॉइस आर्टिस्ट, जयपुर।

पत्रकारिता और मूल्य–आधारित संचार: समाज के नैतिक मार्गदर्शक

पत्रकारिता का इतिहास यह प्रमाणित करता है कि प्रत्येक युग में ऐसे व्यक्तित्व रहे हैं जिन्होंने मीडिया को मात्र व्यवसाय नहीं, बल्कि मानवता की सेवा का माध्यम माना। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी द्वारा संपादित 'हरिजन' तथा बाल गंगाधर तिलक के 'केसरी' जैसे पत्रों ने जनचेतना को आकार दिया। ये पत्र केवल समाचार–पत्र नहीं थे, बल्कि समाज को नैतिक और आत्मिक दिशा देने वाले प्रभावी साधन थे।

इसी परंपरा को 20वीं और 21वीं सदी में कुछ आध्यात्मिक–विचारकों ने नवीन माध्यमों और व्यवहारिक दृष्टिकोणों के साथ आगे बढ़ाया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि मीडिया का उपयोग संघर्ष और समाधान के लिए ही नहीं, बल्कि शांति, मूल्य और सकारात्मकता के प्रसार के लिए भी किया जा सकता है। इसी विचारधारा के समर्थक व मूल्य–आधारित पत्रकारिता की परंपरा के प्रमुख पथप्रदर्शकों में एक विशिष्ट नाम है राजयोगी, मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्रोत दादा करुणाकर शेट्टी।

प्रारंभिक जीवन से मूल्य–संचार की ओर अग्रसर

2 जनवरी 1940 को जन्मे करुणाकर शेट्टी ने मीडिया एवं तकनीक (मैकेनिकल डिज़ाइन) में डिप्लोमा प्राप्त करने के उपरांत एच.एम.टी., बेंगलुरु में सुपरवाइज़र के रूप में कार्य किया। वर्ष 1960 में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू (1937 में अविभाजित सिंध प्रांत में दादा लेखराज द्वारा स्थापित आध्यात्मिक संगठन, जिसका विस्तार आज दुनियाभर के 110 से अधिक देशों में है) से संपर्क के पश्चात उस वातावरण से गहराई से प्रभावित होकर उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन आध्यात्मिक सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

यह वह कालखंड था जब भारतीय मीडिया तीव्र गति से विकसित हो रहा था, किंतु क्षेत्रीय भाषाओं और मूल्य–आधारित सामग्री की उल्लेखनीय कमी थी। दादा करुणा ने इसी शून्य को भरने का संकल्प लिया और मूल्य–संचार को अपना जीवन–लक्ष्य बनाया।

लेखक, भाषाविद् एवं मीडिया–दूरदर्शी

सन् 1960 से 1971 के मध्य उन्होंने कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल और आंध्र प्रदेश में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाओं के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, इसी अवधि में उन्होंने स्थानीय समाचार–पत्रों में नियमित लेखन के माध्यम से समाज से संवाद स्थापित किया। उनके कार्य संख्यात्मक दृष्टि से असीमित प्रतीत होते हैं, तथा उनका प्रभाव भी अत्यंत व्यापक और दूरगामी रहा है।

दक्षिण भारत में आध्यात्मिक-पत्रकारिता की नींव

तेरह से अधिक भाषाओं के कुशल भाषाविद् और प्रख्यात लेखक होने के कारण उन्होंने विभिन्न भाषाओं में लेखन के साथ अपनी स्वयं की प्रिंटिंग प्रेस 'साची गीता प्रिंटर्स' की स्थापना की, जिसके माध्यम से अनेक आध्यात्मिक पुस्तकों तथा वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान-विज्ञान' का प्रकाशन हुआ। यह वह काल था जब क्षेत्रीय-भाषाओं के प्रकाशन सामाजिक-चेतना के प्रभावी माध्यम बन रहे थे। दादा करुणा ने इस प्रवृत्ति को आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़कर आध्यात्मिक-पत्रकारिता की सुदृढ़ नींव रखी।

1971: जनसंपर्क और वैश्विक-संचार में नई दिशा

वर्ष 1971 में उन्हें ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय, माउंट आबू में जनसंपर्क अधिकारी के रूप में आमंत्रित किया गया। यहाँ उन्होंने प्रशासन और मीडिया के बीच समन्वय स्थापित करने वाली अनेक परियोजनाओं का नेतृत्व किया, जो उनकी मीडिया यात्रा का निर्णायक चरण सिद्ध हुआ। उन्होंने भारत तथा विदेशों में स्थापित केंद्रों में उन्नत संचार प्रणालियों, वीडियो, रिकॉर्डिंग, ट्रांसमिशन और मल्टीमीडिया सेटअप को सुदृढ़ किया। सन् 1975 में राजस्थान पत्रिका के विशेष संवाददाता तथा वर्ष 1976 1996 तक यूनाइटेड न्यूज़ ऑफ इंडिया (UNI) के प्रतिनिधि के रूप में भी आपने उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान कीं।

मीडिया, तकनीक और आध्यात्मिकता का समन्वय

डिजिटल-युग में, जहाँ सूचना की गति बढ़ी है, वहीं उसकी दिशा और सार कमजोर हुआ है। ऐसे समय में दादा करुणा का दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक है, उनका मानना है कि-

मीडिया केवल समाचार देने का साधन नहीं, बल्कि मन और चेतना को ऊँचा उठाने का माध्यम है।

जब समाज में नैतिक मूल्यों का क्षरण होता है- तो न केवल शिक्षा, बल्कि पत्रकारिता जैसी संस्थाएं भी दिशाहीन हो सकती हैं। ऐसे में नैतिक शिक्षा और मूल्य-आधारित पत्रकारिता, दोनों मिलकर सच, न्याय, करुणा और जिम्मेदारी जैसे गुणों को पुनर्स्थापित कर सकते हैं। इसी दृष्टि से उन्होंने 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' जैसे टीवी चैनलों, 'रेडियो मधुबन' जैसे सामुदायिक रेडियो तथा मूल्य-आधारित 'डिजिटल-प्लेटफॉर्म्स कुटुंब' आदि की स्थापना की, जिन्हें हम मूल्य-आधारित पत्रकारिता के आधुनिक माध्यम कह सकते हैं, जहाँ मीडिया का उद्देश्य केवल घटना नहीं, चेतना को प्रसारित करना है। आप अनेक विद्वजनों को साथ

जोड़कर, अपने कुशल निर्देशन से दूर-दराज़ आत्मिक संदेश पहुंचाने में सतत महती भूमिका निभा रहे हैं।

दर्शन, साधना और प्रेरणादायक नेतृत्व

दीर्घकालीन राजयोग साधना ने दादा करुणा को वह स्थिरता, शांति और दूरदर्शिता प्रदान की जो मूल्य-आधारित पत्रकारिता की आत्मा है। उनका जीवन यह सिखाता है कि-

- मीडिया तभी प्रभावी है जब उसमें सत्य और सेवा की भावना हो।
- तकनीक तभी सार्थक है जब उसका उपयोग मानव कल्याण के लिए हो।
- पत्रकारिता तभी शक्तिशाली है जब वह मानवता को जोड़ती हो।

आपने सैकड़ों युवा पत्रकारों और संचार कर्मियों को आध्यात्मिकता व राजयोग (Meditation) द्वारा पेशेवर व निजी जीवन में संतुलन की प्रेरणा दी। अनेकों प्रोफेशनल्स को प्रेरित किया कि वे भी अपने जीवन में मूल्यों का संतुलन बनाकर समाज को सकारात्मक दिशा दे सकते हैं। समाज सेवा व उत्कृष्ट कार्यों के लिए समय-समय पर आपको अनेकों राष्ट्रीय- अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से नवाज़ा जाता रहा है।

समाज द्वारा मान्यता: राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय सम्मान

2003: डॉक्यूमेंट्री Discover the Spirit Within को RAPA का Awad of Excellence

2004: UNO द्वारा जनसंचार एवं आध्यात्मिक विकास हेतु अंतरराष्ट्रीय सम्मान

2010: पब्लिक रिलेशंस काउंसिल ऑफ इंडिया का चाणक्य हॉल ऑफ फेम अवॉर्ड

2015: बंट्स ऑर्गनाइज़ेशन, मंगलुरु द्वारा स्वर्ण पदक

यह सभी सम्मान इस बात के प्रमाण हैं कि मूल्य-आधारित पत्रकारिता केवल एक विचार नहीं, बल्कि प्रभावी सामाजिक-परिवर्तन का प्रबल साधन है। वर्तमान में आप ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में महासचिव पद पर कार्य कर संस्थान का गौरव बढ़ाने में सदैव की भांति समर्पित हैं।

निष्कर्ष : मूल्यों के साथ तकनीक मीडिया का भविष्य

आज जब मीडिया टीआरपी, फेक न्यूज़, ध्रुवीकरण और भ्रम जैसी चुनौतियों से घिरा है, तब राजयोगी करुणाकर शेट्टी का जीवन और कार्य यह स्मरण कराता है कि पत्रकारिता केवल पेशा नहीं, बल्कि सामाजिक दायित्व है। दादा करुणा, उस मीडिया अध्याय के सर्जक हैं, जहाँ पत्रकारिता और आध्यात्मिकता मिलकर एक नए मूल्य-आधारित मीडिया-युग की रचना करती हैं।

संदर्भ

- मैकक्वेल, डेनिस. (2010). मास कम्युनिकेशन थ्योरी (छठा संस्करण). लंदन: सेज पब्लिकेशन्स।
- शर्मा, के. सी. (2014). भारतीय पत्रकारिता का इतिहास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- मिश्रा, रामनाथ. (2016). पत्रकारिता के सिद्धांत और व्यवहार. वाराणसी: भारतीय ज्ञानपीठ।
- कुमार, अरविंद. (2018). डिजिटल युग में मीडिया नैतिकता की चुनौतियाँ. भारतीय जनसंचार शोध पत्रिका, 12(2), 45 56।
- गांधी, मोहनदास करमचंद. (1932). हरिजन. अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन।
- तिलक, बाल गंगाधर. (1905). केसरी (चयनित लेख). पुणे: केसरी प्रकाशन।
- ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय. (2020). मीडिया, मूल्य और आध्यात्मिकता. माउंट आबू: बी.के. पब्लिकेशन डिवीजन।
- शेट्टी, करुणाकर. (2008). मीडिया और चेतना. माउंट आबू: राजयोग पब्लिकेशन्स।
- McLuhan, M. (1964). Understanding Media: The Extensions of Man. New York: McGraw-Hill.
- United Nations. (2004). Communication for Spiritual and Social Development. New York: UN Publications.

❐❐